कृपा का एक स्पर्शनीय अनुभव

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

हाल ही में मैंने "मन्दिर में रहो" सत्संगों के सीधे वीडिओ प्रसारण की प्रबन्ध संचालक रोहिणी मेनन को अपने एक अद्‌भुत अनुभव के बारे में बताया जो मुझे गुढीपाडवा के दिन मन्दिर में हुआ था। गुढीपाडवा, भारतीय "पंचांग" के अनुसार वर्ष के साढ़े तीन सर्वाधिक शुभ दिनों में से एक दिन है। मैंने जब रोहिणी को अपना अनुभव बताया तो उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं इस अनुभव को सिद्धयोग संघम् को बताने के लिए सहमति दूँगी? मैंने अपनी सहमति दी—तो यहाँ प्रस्तुत है यह अनुभव।

श्री मुक्तानन्द आश्रम में बड़े बाबा के मन्दिर में उनका वन्दन करने के बाद मैंने अपना आसन ग्रहण किया। कुछ पलों बाद मेरी नज़रें यूँही दाहिनी ओर मुड़ीं तो अपनी आँखों के सामने मैंने यह दृश्य देखा—शिव नटराज की मूर्ति के समक्ष स्थित अग्नि-कुण्ड से रिबन के आकार में निर्मल धुआँ उठ रहा था। वह धुआँ बड़ा नाजुक था। वह कुछ नीला-दूधिया-सा, कुछ दूधिया-नीला-सा था। मैं मन्त्रमुग्ध थी।

कुछ पलों तक मैं इस दृश्य के सौन्दर्य का रसास्वादन करती रही। फिर मैंने सोचा, "मैं चाहती हूँ कि वीडिओ का सीधा प्रसारण आरम्भ हो उसके पहले, सभी लोग इस नैसर्गिक सुन्दरता का आनन्द उठाएँ।"

मैंने मन्दिर में बैठे सत्संग के प्रतिभागियों से भगवान नटराज के सामने से उठती धुएँ की भव्य और पारदर्शी शिखाओं को देखने को कहा। जब सभी मुड़कर नृत्य करते हुए धुएँ के

सौन्दर्य को देख रहे थे तो मन्दिर में "आह" का मिश्री घुला समवेत स्वर गूँजा। मेरा ध्यान इस ओर भी गया कि मेरी नज़रों की सीध में बैठे एक व्यक्ति ने ठीक उस धुएँ सदृश नीले-दूधिया रंग के कपड़े पहने हुए थे। जब हम भगवान नित्यानन्द मन्दिर में बैठे हुए, गुढीपाडवा के पावन दिवस का उत्सव मनाने के लिए सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सबके साथ जुड़ने की प्रतीक्षा कर रहे थे, मैं द्रवित थी कि मुझे उठते धुएँ के रूप में भगवान नटराज का नृत्य देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बाद में सत्संग में, मैंने सभी को बड़े बाबा के स्वर्णिम स्वरूप पर ध्यान करने के लिए आमन्त्रित किया। ध्यान के दौरान, मेरी आँखें बड़े बाबा के मुस्कराते मुख पर टिकी हुई थीं। कुछ ही पलों के भीतर, मैंने देखा कि मन्दिर में केवल बड़े बाबा का स्वरूप ही दृष्टिगोचर था—क्योंकि सम्पूर्ण मन्दिर उसी मृदुल, कोमल, नाजुक, स्पन्दित होते नीले-दूधिया धुएँ से व्याप्त था जो धुआँ भगवान शिव नटराज की मूर्ति के समक्ष रखे अग्नि-कुण्ड से निकल रहा था। इस नील प्रकाश के कण हवा में चमचमा रहे थे, नृत्य कर रहे थे। उन्होंने बड़े बाबा की सत्ता के चारों ओर ऐसा आकार ले लिया था जैसे उलटी लटकती पानी की बूँद। मैं इस ज्ञान से अभिभूत थी कि भगवान नटराज के सामने का धुआँ खुद मन्दिर में चला आया था। नील दीप्ति पूरे ध्यान के दौरान हमारे साथ बनी रही।

यह अनुभव शुद्धिकारक भी था और रोमांचकारी भी। ऐसी ऊर्जा से आप्लावित होना प्रभु-प्रेम से अभिसिक्त होना था।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।